गर्भ के दौरान दवाइयों से सावधान

वीणा शिवपुरी

अनेक अंग्रेज़ी दवाइयां ऐसी हैं जो गर्भ के दौरान लेने से पेट के बच्चे पर बहुत बुरा असर डालती हैं। माताओं को इस की जानकारी न होने की वजह से वे इस तरह की दवाइयां ले लेती हैं। एक तो आजकल छोटी-मोटी दवाई खुद खरीद कर खा लेने का रिवाज चल पड़ा है, जो खतरनाक है। गर्भवती औरत के लिए मामूली सिरदर्द की गोली भी नुकसानदेह हो सकती है। दूसरी बात यह कि औरतें जब किसी बीमारी के लिए डाक्टर के पास जाती हैं तो उसे नहीं बताती कि वे पेट से हैं। वैसे तो ऐसी कोई दवाई देने से पहले डाक्टर का फ़र्ज है कि वह खुद गर्भ के बारे में पूछ ले। परंतु हम औरतों को भी इस बात की जानकारी होनी अच्छी बात है।

कैसे असर होता है?

कोई भी दवाई जो मां लेती है वह नाल के जरिए उसके पेट में पल रहे बच्चे तक पहुंच जाती है। ऐसा भी हो सकता है कि वह दवाई मां को कोई नुकसान न पहुंचाए, लेकिन बच्चे की जान ले ले या फिर वह विकलांग पैदा हो।

दूध पिलाने वाली मां को भी इन अंग्रेज़ी दवाइयों के असर से सावधान रहना चाहिए। ये दवाइयां दूध के ज़रिए बच्चे के शरीर मे चली जाती हैं।

याद रखें—

- **गर्भ के दौरान अपने आप कोई दवाई न खाएं।**
- **डाक्टर को हमेशा बता दें कि आप गर्भवती हैं।**

इसी तरह से एक और चीज़ है जिससे गर्भवती महिला को सावधान रहना चाहिए। वह है एक्स रे या शरीर के किसी हिस्से का फोटो उतारना। दुर्भाग्य से आजकल बहुत से डाक्टर भी पैसे के लालच में इन बातों का ध्यान नहीं रखते। जब तक बहुत ज़रूरी न हो गर्भ के दौरान एक्सरे नहीं कराना चाहिए। यदि कराना भी पड़े तो पेट को अच्छी तरह ढक दिया जाना चाहिए।

कुछ खतरनाक उदाहरण

विदेश में साठ के दशक में इन दवाइयों से बड़ा हादसा हुआ था। गर्भवती औरतों ने 'थेलिडोमाइड' नामक दवा खाई जिससे उनके बच्चे बग़ैर हाथ पैरों के जन्मे। चालीस हज़ार बच्चों पर जीवन तबाह हो गया। ये बच्चे 'थेलिडोमाइड' बच्चों के नाम से जाने जाते हैं।

कई दवाइयां ऐसी भी होती हैं जिनका असर तुरंत नज़र न आए, लेकिन आगे चल कर उन बच्चों को कैंसर जैसी बीमारी हो सकती है। ऐसी ही एक दवाई जो ताक़त की दवाई के नाम पर बेची जाती थी, उससे बड़ी संख्या में गर्भपात हो गए।

कई बार प्रसव के दौरान दर्द शुरु करने के लिए डाक्टर सुई से ग्लूकोज़ चढ़ाती हैं। उसमें भी बहुत ध्यान रखने की ज़रूरत है। अगर ग्लूकोज़ चढ़ाने की गति तेज़ हो जाए तो बच्चा पेट में मर सकता है। जब दो दर्दों के बीच बच्चेदानी ढीली पड़ती है तभी बच्चे को ऑक्सीजन मिलती है। अगर दवाइयों से दर्द लगातार आते रहेंगे तो बच्चे को पूरी सांस नहीं आएगी।

अभी भी बहुत सी दवाइयों के भ्रूण पर असर के बारे में पूरी जानकारी नहीं है। इसलिए बेहतर यही है कि जहां तक हो सके गर्भ के दौरान दवाइयां लेने से बचें। इन दवाइयों से बच्चों में विकलांगता, कमजोर दिमाग, ओंठ या तालू फटा होना, जिगर, गुर्दे व दिल की बीमारियां जैसे नुकसान हो सकते हैं।

फिर पछताए होत क्या?

हमारे देहाती इलाकों में डाक्टरों व दवाखानों की सुविधाएं वैसे ही कम है। कई बार तो पान बीड़ी वाले ही छोटी-मोटी दवाइयां बेजते नज़र आते हैं। अगर प्राथमिक चिकित्सा केंद्र हुआ भी तो इन दवाइयों के नुकसान से निपटने का बंदोबस्त नहीं होता। न ही वहां इतने अनुभवी डाक्टर होते हैं।

दवाइयों के नुकसान का पता भी तुरंत नहीं चलता कि औरत का गर्भपात करा दिया जाए। जब तक पता चलता है बहुत देर हो चुकी होती है। आज भी दुनिया में लाखों लोग ऐसे है जो अपनी मां की या डाक्टर की ग़लती की सज़ा भोग रहे हैं।

स्वास्थ्य सेवाओं से जुड़े कार्यकर्त्ताओं को बार बार इस मुद्दे की चर्चा करनी चाहिए। गर्भवती महिलाओं को दवाइयों से जुड़े खतरों से सावधान रहना चाहिए।